लोमड़ी और छड़ी

लोमड़ी एक दिन सड़क पर जा रही थी जब उसे खाई में पड़ी एक छड़ी दिखाई दी.

"वो ज़रूर कभी काम आएगी," लोमड़ी ने खुद से कहा. फिर उसने उसे अपनी बोरे में रख लिया और सड़क पर आगे चली.

शाम को वो एक छोटे से घर के सामने पहुंची. उसने दरवाजा खटखटाया. "ठक! ठक! ठक! ठक!"

एक औरत ने दरवाजा खोला.

"क्या मैं आपके चूल्हे के पास आकर सो सकती हूँ?" लोमड़ी ने पूछा.

"नहीं," महिला ने कहा. "हमारे घर में बहुत लोग हैं, बिल्कुल जगह नहीं है."

"मैं नाक के ऊपर अपनी पूंछ रखूंगी और एक कोने में दुबक कर सो जाऊंगी और बेंच के नीचे छड़ी रख दूँगी," लोमड़ी ने कहा. "आपको पता भी नहीं चलेगा कि मैं घर में हूँ या नहीं."

फिर औरत ने लोमड़ी को घर में आने दिया. उसने छड़ी को बेंच के नीचे रख दिया और अपनी पूंछ को नाक पर रखा. फिर लोमड़ी सुबह बहुत जल्दी उठी और उसने अपनी छड़ी को चूल्हे में डालकर उसे जला दिया.

जब लोगों ने लोमड़ी को जगाया तो उसने कहा, "मेरी छड़ी कहीं चली गई है! मेरी छड़ी चली गई है! अब आपको उसके बदले में मुझे एक मुर्गी देनी होगी."

उसने ऐसा शोर मचाया कि लोगों को मज़बूरी में उसे एक मुर्गी देनी पड़ी. फिर लोमड़ी ने मुर्गी अपने बोरे में डाली और सड़क पर आगे चली.

शाम को वो एक छोटे से घर के सामने पहुंची. उसने दरवाजा खटखटाया. "ठक! ठक! ठक! ठक!"

एक आदमी दरवाजे पर आया.

"क्या मैं आपके चूल्हे के पास सो सकती हूँ?" लोमड़ी ने पूछा.

"बिल्कुल नहीं," आदमी ने कहा. "हमारा घर एकदम फुल है और वहां कोई खाली जगह नहीं है."

"मैं अपनी नाक के ऊपर अपनी पूंछ रखूंगी और बेंच के नीचे अपनी मुर्गी को रखूंगी," लोमड़ी ने कहा. "आपको पता भी नहीं चलेगा कि मैं वहाँ हूँ."

फिर आदमी ने उसे अंदर आने दिया. लोमड़ी एक कोने में घुस गई और उसने बेंच के नीचे अपनी मुर्गी रख दी. फिर लोमड़ी बहुत सुबह उठी और वो मुर्गी खा गई - पूरी, समूची.

जब लोगों ने लोमड़ी को जगाया, तो उसने कहा, "मेरी मुर्गी कहीं चली गई है! मेरी मुर्गी कहीं चली गई है! अब आपको उसके बदले मुझे एक बत्तख देनी होगी."

उसने ऐसा शोर मचाया कि लोगों को मज़बूरी में उसे एक बत्तख देनी पड़ी. फिर लोमड़ी ने बत्तख अपने बोरे में डाली और सड़क पर आगे चली.

शाम के समय वह एक चरवाहे के घर पहुंची.

उसने दरवाजा खटखटाया. "ठक! ठक! ठक! ठक!"

चरवाहा दरवाजे पर आया.

"क्या मैं आपके चूल्हे के पास सो सकती हूँ?" लोमड़ी ने पूछा.

"ओह, नहीं," चरवाहे ने कहा. "हमारे यहाँ बिल्कुल जगह नहीं है."

लेकिन चरवाहे के बच्चों ने कहा, "देखो लोमड़ी कितनी सुंदर है. उसे अंदर आने दो. उसे अंदर आने दो." इसलिए चरवाहे ने लोमड़ी को अंदर आने दिया. लोमड़ी ने अपनी नाक के ऊपर पूंछ रखी और एक कोने में सो गई. उसने बत्तख को बेंच के नीचे रख दिया.

लोमड़ी सुबह बहुत जल्दी उठी और एक पंख को छोड़कर वो पूरी बत्तख खा गई. जब लोग सोकर उठे तो लोमड़ी चिल्लाई, "मेरी बत्तख कहीं चली गई! मेरी बत्तख कहीं चली गई! अब उसकी जगह आपको मुझे एक भेड़ देनी होगी."

लोमड़ी ने ऐसा उपद्रव किया कि चरवाहा उसके बोरे में एक मेमना भरने के लिए बाहर बाड़े में गया. लेकिन वो सच में अपना मेमना लोमड़ी को नहीं देना चाहता था, और इसके अलावा, उसने लोमड़ी की नाक पर बत्तख का एक पंख भी चिपका हुआ देखा था. इसलिए मेमने की बजाए चरवाहे ने लोमड़ी के बोरे में अपना बहादुर कुत्ता डाल दिया.

लोमड़ी ने बोरा उठाया और खुद से कहा, "बड़ा अच्छा मोटा मेमना मिला है," और फिर वो सड़क पर आगे चली. थोड़ी देर के बाद उसे लगा कि वह रुककर एक बार मेमने को देखेगी. लेकिन जैसे ही उसने बोरा खोला उसमें से कुत्ते ने छलांग लगाई!

लोमड़ी भागने लगी पर कुत्ता उसके पीछे-पीछे दौड़ा. वे बहुत देर तक दौड़े. अंत में लोमड़ी को लगा कि वो और आगे नहीं भाग पाएगी. तभी उसे चट्टान में एक छेद दिखा. वो उसके घुसने के लिए काफी बड़ा था और वो उसमें घुस गई. वो बाहर खड़े कुत्ते को भौंकते हुए सुन सकती थी, लेकिन लोमड़ी जानती थी कि कुत्ता अंदर नहीं आ सकता था.
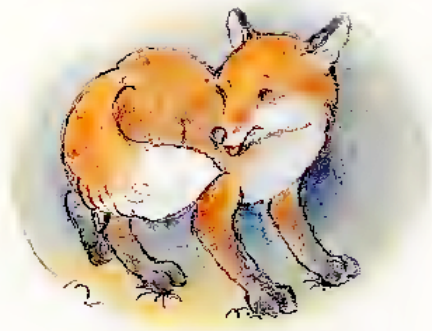
लोमड़ी ने पूछा, "छोटे पैर, छोटे पैर, तुमने मुझे कुत्ते से भागने में कैसे मदद की?"

उसके पैरों ने जवाब दिया, "हम जितनी तेजी से भाग सकते थे हम उतनी तेज़ भागे."

"धन्यवाद," लोमड़ी ने कहा. "छोटी आँखें, छोटी आँखें, तुमने क्या किया?"

उसकी आँखों ने जवाब दिया, "हमने हर छड़ी और पत्थर पर निगाह रखी ताकि आप तेजी से भाग सकें."

"धन्यवाद," लोमड़ी ने कहा. "छोटी नाक, छोटी नाक, तुमने क्या किया?"

उसकी नाक ने जवाब दिया, "मैंने सूँघकर आपके लिए सबसे अच्छा रास्ता तय किया."

"धन्यवाद," लोमड़ी ने कहा. "छोटी पूंछ, छोटी पूंछ, तुमने क्या किया?"

"अरे!" पूंछ ने कहा, "मैंने तो कुछ भी नहीं किया."

"तो फिर तुम हमारे साथ यहाँ नहीं रह सकती हो," लोमड़ी ने कहा. और यह कहकर उसने अपनी पूंछ को छेद से बाहर निकाल दिया. कुत्ते ने तुरंत छलांग लगाई और लोमड़ी की पूंछ को काट डाला.

इसलिए अगर आप किसी बिना पूंछ वाली लोमड़ी को दौड़ते हुए देखें तो आप तुरंत समझ जाएंगे कि वो कौन सी लोमड़ी है.

समाप्त